कृषक जीवन का महाकाव्य: गोदान

- प्रो. सविता पुंडलिक चौधरी

शोध सारांश -

उपन्यास सम्राट के नाम से जाने - जाने वाले उपन्यासकार के रूप में मुंशी प्रेमचन्द को जाना जाता है। हिन्दी साहित्य जगत में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जो मुंशीजी को न जानता हो। मुंशीजी ने लगभग तीन सौ कहानियाँ और बारह उपन्यासों की रचना की है। प्रेमचंद का समस्त साहित्य निम्नवर्गीय भारतीयों का प्रतिनिधित्व करता है। फिर चाहे हम बात करे ठाकुर का कुआँ, सद्गति,कफन, ईदगाह, सवा सेर गेहूं की या फिर गबन, गोदान और निर्मला की इन सभी साहित्यिक कृतियों में मुंशीजी ने उस समय की जमींदारी और सामंती व्यवस्था] जातिगत भेदभाव का यथार्थ चित्रण किया है। प्रेमचन्द एक महान साहित्यकार ही नहीं वरन् हिंदी साहित्य में उपन्यास सम्राट के नाम से भी प्रसिद्ध हैं]उन्होंने गोदान में भारतीय किसान का संपूर्ण जीवन - उसकी आकांक्षा और निराशा उसकी धर्मभीरूता और भारत परायणता के साथ स्वार्थपरता और बैठकबाजी उसकी बेबसी और निरीहता का जीता जागता उदाहरण हैं। गोदान होरी की कहानी है जो समूचे भारत के किसान का प्रतिनिधित्व करता हैं। सन् **1936** में प्रकाशित गोदान मुंशी प्रेमचन्द का सबसे महत्वपूर्ण उपन्यास है। प्राय: सभी आलोचकों का मत हैं कि गोदान सभी उपन्यासों का शीर्षमणि है। गोदान का कथानक ग्रामीण जीवन पर आधारित कथानक है। उपन्यास का नायक होरी एक भारतीय किसान है। गोदान में भारतीय ग्रामीण परिवेश के अनेकमुखी दर्शन होते हैं। इसी कारण डॉ गंगाप्रसाद विमल ने इसे भारतीय ग्रामीण जीवन की समस्याओं का महाकाव्य और गीता की उपाधि दी है। मुंशी प्रेमचन्द ने गोदान उपन्यास में बींसवी सदी के आरम्भिक दशकों के ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया हैं इसमे कृषि संस्कृति का भी तल्लख और मार्मिक चित्रण मिलता है। गोदान यह किसान की वेदना की दास्तान है। इसमे साम्राज्यवादी ताकतों का पर्दापाश किया है। ग्रामीण जीवन के चित्रण में प्रेमचंद ने यथार्थवादी शैली का अच्छा प्रयोग किया है जिससे कथा की प्रभावात्मकता बढी है। प्रेमचंद गोदान में भारतीय समाज का समग्र चित्र उतारना चाहते थे जिसका प्रमुख भाग गाँव में बिखरा पडा है उन्होंने इसमें किसानों पर होने वाले अन्याय, अत्याचार और शोषण का वास्तविक विवेचन किया है ।

बीज शब्द -यथार्थवादी, कस्बाई, अध्याचित, दास्तान, सामंतवाद, गुलामवाद, मरजाद, शोषण, अत्याचार

प्रेमचन्द हिंदी साहित्य के उपन्यास सम्राट तथा युग प्रवर्तक थे। इनके उपन्यासों में प्रथम बार जनसामान्य की वाणी को जन -जन तक पहुँचाया। ग्रामीण जीवन की धरातल विवशता को मार्मिकता से उद्घाटित किया है । प्रेमचन्द के साहित्य के संबंध में निर्मल वर्मा कहते हैं कि प्रेमचन्द की रचनाओं में भारतीय मनुष्य की बनावट के पहली बार दर्शन हुए। यह एक चेहरे का सत्य नहीं बल्कि ऐसे सत्य का चेहरा है जिसे उन्होंने ग्रामीण, शहरी और

कस्बाई चेहरों के बीच गढा था। प्रेमचन्द जिस समय लिख रहे थे उस समय देश में एक तरफ सामंतवाद था और दूसरी और गुलामवाद था। प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में हर वर्ग जाति के पात्रों को स्थान दिया हैं।

गोदान में प्रेमचन्द को सबसे अधिक सफलता मिली है पात्र - सृष्टि और चरित्रांकन में। क्या गाँव, क्या नगर दोनों जगह के पात्र जीवंत हो उठे हैं। गोदान का सर्वप्रमुख ग्रामीण पात्र है परम्परागत भारतीय किसान की जीवंत प्रतिमूर्ति होरी जिससे कथा की शुरूआत भी होती है और अंत भी होता है। अर्धांगिनी के रूप में धनिया हैं जो शुरू से अंत तक होरी का साथ देती है। अन्य ग्रामीण पात्रों में होरी का पुत्र गोबर, पुत्रिया सोना और रूपा गोबर की पत्नी झुनिया , होरी के भाई हीरा और शोभा, भोला झुनिया के पिता,सिलिया, मातादीन और दातादीन - बाप-बेटे, दुलारी, सहुआईन, रायसाहब, झिंगुरीसिंह, पटेश्वरीलाल गाँव के साहूकार आदि प्रमुख पात्र है।शहरी पात्रों में मेहता,मालती,खन्ना ,ओंकारनाथ, संपादक आदि प्रमुख हैं। लेखक ने होरी और धनिया के परिवार के माध्यम से ग्रामीण संस्कृति को सजीव रूप से साकार किया है जिससे साहूकारी व्यवस्था में किसानों के निरंतर होनेवाले शोषण और उससे उत्पन्न त्रासद स्थितियों को बडे यथार्थ रूप से उजागर किया है। गोदान के संदर्भ में डॉ. रामविलास शर्मा ने लिखा है कि "गोदान किसान जीवन का महाकाव्य है। उसमे उस जीवन का एक पहलू नहीं दिखाया गया वह एक विशाल नदी की तरह है। इसमे मूल धारा के साथ आसपास के नालों का पानी जड से उखडे हुए पुराने खोखले पेड और खेतों का घासपात भी बहता हुआ दिखाई देता है।"[1] गोदान उपन्यास द्वारा लेखक ने लोगों में मानवीय चेतना एवं जनजागरूकता निर्माण की है। तत्कालीन भारतीय परिवेश का सजीव एवं यथार्थ चित्रण किया है। अगर हमें तत्कालीन भारतीय परिदृश्य को समझना है तो हमें गोदान को पढना चाहिए। उसका गंभीरता पूर्वक अध्ययन किया जाए तो ग्राम संस्कृति का सजीव चित्रण सामने आएगा। आज की आधुनिक युवा पीढी को एवं साहित्य से जुडे लोगों के लिए गोदान प्रेरणा स्रोत है।

होरी भारतीय किसान का मूर्तिमान रूप है। भारतीय किसान की समस्त विषमताओं का वह जीवंत प्रतिनिधि है । इस संदर्भ में डॉ.कमलेश कुमार गुप्त ने लिखा हैं कि "जो अपने परंपरागत आचार-विचार रूढि.-विश्वास नीति-मर्यादा का उल्लंघन नहीं कर सकता। उन शक्तियों के विरूद्ध जिनसे वह बुरी तरह प्रताडि.त होता हैं उसके मन में कोई असंतोष या आक्रोश नहीं उपजता। पुरोहित-पुलिस जमींदार-साहूकार बिरादरी- पंचायत सब उसे छलते हैं लेकिन वह उनके खिलाफ कभी चू तक नहीं करता।"[2] होरी सदैव परिस्थितियों के सम्मुख नतमस्तक होता रहता है कभी विद्रोह नहीं करता उसकी सरलता, ईमानदारी, उदारता ही उसके चरित्र की सबसे बडी पूंजी हैं। इस संबंध में पुष्पपाल सिंह कहते है कि "इस ग्राम्य परिवेश में प्रेमचंद इतने गहरे उतरे है। उनके दर्द में उनकी इतनी गहरी साँस है कि वे इसकी साँस -साँस से परिचित है।"[3] वस्तुतः प्रेमचंद अपना आपा खोकर सब कुछ भूल - बिसरा कर भारतीय किसानों के अंग-संग रहे थे। उसकी भाषा, वेशभूषा, व्यवसाय, रहन-सहन-कहन आदि से वे जिस रूप में परिचित थे उसमे रमे, रचे-बसे है उतना अन्य कोई कथाकार नहीं है। प्रेमचन्द ने भारतीय ग्रामीण जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है। प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से प्रेमचन्द यह बताना चाहते है

कि महाजनी युग में किसान के लिए अपने अस्तित्व को बनाए रखना असंभव हो गया था। उपन्यास का नायक होरी जीवनभर अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करता रहता है लेकिन अंतत: उसे मजदूर बनना पडता है। गोदान उपन्यास के बारे में पुष्पपाल सिंह ने कहा है "कि गोदान का पूरा महावृत्त किसानों की इस महावृत्त का अनुपम आख्यान है। वस्तुत: किसान भू रक्षा प्रयत्न में अपना सर्वस्व न्योछावर कर देता है। आठ आने रोज सडक का मजदूर बन जाता है।"[4] रात के बारह-बारह बजे तक उसका और धनिया का सुतली कातना उसके तन का सत् ही मजदूरी की इस चर्चा में निकल जाता है। आत्मग्लानी की इस दाहक स्थिति में होरी जीवन के अंतिम पडाव पर पहुँच जाता है। सुतली की इसी कमाई के बीस आने उसका गोदान बनते है। वह जिस कारूणिक और त्रासद रूप में संसार से बिदा होता है लगता है उसका मरण सामान्य मरण नहीं है मृत्यू है। एक पूरी किसान वृत्ती की त्रासद मृत्यू है जो अपनी जमीन रक्षा में प्राणोत्सर्ग कर देता है। आज के औद्योगिकीकरण के युग में किसानों की समस्याओं का प्रासंगिक एवं यथार्थ चित्रण गोदान उपन्यास में दिखाई देता है। गोदान के बारे में रतिलाल शाहीन ने लिखा है कि "महाजनी सभ्यता जमींदारी नासूर को प्रेमचन्द ने बहुत करीब से देखा था इसमे ठेकेदार ठाकुर दस रूपए का दस्तावेज लिखवाकर महज पाँच रूपए देता है।बाकी रकम नजराने, तहरीर दस्तूरी और ब्याज के तौर पर काट लेता है।"[5] गोदान औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत किसानों का महाजनों से कर्ज लेना, सामाजिक कुरूपता, शोषण, अत्याचार से उत्पन्न भारतीय कृषक जीवन की संघर्ष गाथा है। होरी गरीब सीधा-साधा किसान है। वह महाजन से कर्ज के रूप में तीन सौ रूपया लेता है। फसल आने के बाद उस कर्ज की अदायगी भी करता है उसके बावजूद भी उसे कर्ज से मुक्ति नहीं मिलती। इस संबंध में प्रेमचन्द कहते है "इस फसल में सब -कुछ तोल देने पर भी तीन सौ रूपया का कर्ज है। सौ रूपया साल सूद बढ.ते है। साठ रूपया का कर्ज मांगने पर अब भी साठ बाकी है।"[6] गोदान में ग्रामीण समाज जमींदार और महाजन से प्रभावित है। होरी जब महाजन से कर्ज के रूप में तीन सौ रूपया ले लेता है तो वह महाजन रूपया चुकाने के बाद भी उसे कर्ज से मुक्त नहीं करता । होरी कृषक की व्यथा बताते हुए कहता है कि "अनाज तो सबका खेतों से ही जमींदार महाजन अपना कहकर ले जाता है। किसान के लिए पाँच सेर तक का अनाज नहीं बचता जमींदार तो एक ही है मगर महाजन तीन - तीन हैं सहुआइन अलग, मगरू अलग और दातादिन पंडित अलग। किसी का ब्याज भी पूरा न चुका। जमींदार के भी आधे रूपये बाकी पड गए।"[7] इस वक्तव्य में किसान के मन की करूण स्थिति का चित्रण है। होरी कहता है - 'हमीं को खेती से क्या मिलता है जो दस रूपये महीने का नौकर है वह भी हमसे अच्छा खाता पहनता है। लेकिन खेतों को छोडा नहीं जाता मरजाद भी तो पालना ही पडता है। खेती में जो मरजाद है, वह नौकरी में तो नहीं है।" [8] निराला ने राम की शक्तिपूजा में जो बात राम के लिए कहीं है, वहीं प्रेमचन्द ने गोदान में होरी के लिए कहीं है - 'जीवन के संघर्ष में उसे सदैव हार हुई पर उसने हिम्मत नहीं हारी प्रत्येक हार जैसे उसे लडने की शक्ति दे देती थी। मगर अब वह उस अंतिम दशा को पहुँच गया था जब उसमें आत्मविश्वास भी न रहा था।"[9] उपन्यास में लेखक ने समस्या से ज्यादा चरित्र के विकास पर बल दिया है। इस तरह से प्रेमचन्दजी ने गोदान उपन्यास में होरी नायक का यथार्थ चित्रण किया है। गोदान उपन्यास के संदर्भ डॉ.

रामविलास शर्मा में लिखा है कि "यह अंत नहीं है और आगे बढों जब तक कि रंगभूमि में विजय न हो जब तक देश का कायाकल्प न हो जब तक की इस कर्मभूमी में गबन और गोदान के होरी और रामनाथ का त्रस्त होना बंद न हो जाय और हमारा देश...बन जाए।"[10] आधुनिक युग मे गोदान उपन्यास के माध्यम से कृषक जीवन की समस्याओं का जीवंत चित्रण दिखाई देता है। आज भी कृषकों की स्थिति में कहीं कोई बदलाव दिखाई नहीं देता। सरकारी योजनाए पूरी तरह से ग्रामीण किसानों तक पहुँचती ही नहीं है जिसकी वजह से भारतीय किसान आज भी कर्ज के बोझ से दबा हुआ हैं।

प्रेमचन्द के गोदान उपन्यास में नारी विमर्श को सामाजिक चेतना का आधार बनाया है। गोदान में धनिया का चरित्र आर्थिक और राजनीतिक असमानताओं से जूझता है जो स्वतंत्रता पूर्व युग के दौरान कृषि संघर्षों में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। इस संबंध में डॉ. अब्दुरशीद कहते है कि "दलित चेतना की प्रखर अभिव्यक्ति प्रेमचन्द की कहानियों में तथा उपन्यासों में हुई हैं। प्रेमचंद की इस गहरी और व्यापक संवेदनशीलता को नकारना कृतघ्नता ही होगा।"[11] समाज में छुआछूत की भावनाओं को भी उपन्यास में अभिव्यक्त किया है उनके गोदान में दलित-सवर्ण संघर्ष ऊँच -नीच एवं भेदभाव का शिकार दलित होता है। सिलिया की जब गाँव में कोई मदद नहीं करता तब धनिया उसकी मदद करती है। उपन्यास में धनिया ने अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई और सामाजिक चेतना को उजागर किया है। नारी विमर्श में दलित चेतना का भी अंतर्भाव लेखक ने किया है।

किसान खेती करते समय पशु-धन संपदा को अपने जीवन में सबसे ज्यादा महत्व देता है। किसान अपने जीवन में परिवार का उदर निर्वाह करने हेतू पशुपालन को पसंद करता है। इस कथा के नायक होरी के मन में कई दिनों से एक आस थी कि उसके दरवाजे पर भी एक गाय हो लेकिन उसके पास पैसे नहीं थे इसीलिए वह भोला को भूसा देता है और उसके बदले उससे गाय लेता है। होरी के घर में गाय आने पर परिवार के सदस्यों की खुशी देखते ही बनती है। प्रेमचन्द लिखते हैं होरी का परिवार फूला नहीं समा रहा हैं विशेषकर होरी क्योंकि "उसकी तो आज चिर-संचित अभिलाषा पूर्ण हुई है। गाय बहुत सुंदर और अच्छी थी। यह समाचार सारे गाँव में आग की तरह फैल गया।"[12] होरी के घर में गाय आने से उसके परिवार को आनंद मिलता हैं। सारे गाँव में गाय को लेकर चर्चा होती है। होरी के मन की आस कई दिनों बाद पूर्ण होती है। गाय की वजह से होरी अपने आप को सम्मान का प्रतीक मानता है।

गोदान उपन्यास में सामाजिक उपादेयता - प्रेमचन्द ने जब गोदान की रचना की थी तब वे भी कर्ज के बोझ से दबे हुए थे। गोदान की मूल समस्या किसान की ऋण समस्या है। गोदान को पढ.ने पर ऐसा महसूस होता है कि प्रेमचन्दजी ने होरी की नहीं बल्कि अपनी खुद की आप बीती लिखी हैं। गोदान में कृषक जीवन की समस्याओं का समाधान करने हेतू लेखक ने गंभीरता पूर्वक चिंतन किया हैं। प्रेमचन्द ने सामाजिक उपादेयता का महत्व गोदान उपन्यास में विशद किया हैं। समूचे भारत के किसानों की समस्याओं का परिवेश एवं परिदृश्य गोदान उपन्यास में चित्रित किया हैं। उसका केन्द्र बिंदु लखनऊ के बेलरी गाँव का होरी है जिसके माध्यम से कृषक जीवन की कथा

का वर्णन किया गया है। तत्कालीन भारतीय समाज में जमींदारों का सामाजिक नियंत्रण था। जमीदार एवं साहुकार किसानों को ब्याज पर धन राशी देते थे जो किसान धन राशी वापस नहीं कर पाता तो उसकी भूमि को हथिया लेते थे। उन्हें मजदूर बनने पर मजबूर किया जाता था। कर्ज का बोझा इतना पडता था जिसके कारण एक किसान एक गाय पालने की इच्छा भी पूर्ण नहीं कर पाता था। गोदान उपन्यास में नायक-नायिका के रूप में होरी और धनिया को अभिव्यक्त किया गया है। इस संदर्भ में प्रेमचन्द लिखते है कि "परदेश में संगी -साथी निकल ही आते है और अम्मा यह तो स्वार्थ का संसार है जिसके साथ चार पैसे गम खाओं वहीं अपना। खाली हाथ तो मां- बाप भी नहीं पूछते।"[13] भारत में वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गोदान की प्रासंगिकता अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। आज सामाजिक परिवेश बदल गया है। दिन-प्रतिदिन सामाजिक रिश्तों में भी बदलाव होता जा रहा है। होरी और धनिया के माध्यम से प्रेमचन्दजी ने उन सभी भारतीय परिवारों की आर्थिक स्थिति का चित्रण किया है जो आज भी होरी की तरह जीवनयापन कर रहे है । गोदान एक ऐसा उपन्यास है जिसकी कथावस्तु में शोषणकारी समस्त शक्ति समाहित है यह कृषक जीवन की त्रासदी को दर्शाता है। भारतीय किसानों की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक वास्तविकता को गोदान के माध्यम से उजागर किया गया है। ग्रामवासियों के रीति-रिवाज तथा लोकसंस्कृति का सजीव चित्रण गोदान में मिलता हैं।

निष्कर्ष

गोदान उपन्यास में स्वतंत्रतापूर्व भारत का वास्तविक चित्रण है। किसानों एवं मजदूरों के होने वाले शोषण, ग्रामीण एवं शहरी जीवन की कहानी को प्रेमचन्द ने बहुत ही बेबाकी से प्रस्तुत किया है। तत्कालीन भारतीय परिवेश तथा देशकाल की कृषक जीवनधारा का यथार्थ चित्रण गोदान में मिलता है। आधुनिक कृषक समाज में होरी नामक किसान का परिदृश्य आज भी किसानों की आत्महत्या के रूप में दिखाई देता है। किसानों की समस्या एवं दशाओं को समझना हैं तो गोदान का यथार्थ आकलन नई पीढी को करना होगा। इस उपन्यास में साहुकारी एवं महाजनों से पीढीत एवं शोषित किसानों का यथार्थ दर्शन होता है। आज भी भारत के किसान आत्महत्या कर रहे है उन सभी में होरी की आत्मा मौजूद है। होरी और उसके परिवार के माध्यम से यह कथा कही गई है। गोदान किसान जीवन का महाकाव्य है।

संदर्भ सूची:-

1. डॉ.रामविलास शर्मा: संस्करण **1993,** प्रेमचंद और उनका युग, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि, नई दिल्ली, पृ.**45**
2. डॉ.कमलेश कुमार गुप्त: संस्करण **2011,-**गोदान: कुछ संदर्भ, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, पृ **69**
3. पुष्पपाल सिंह: सितंबर-अक्तूबर **2014, -** सामाजिक सरोकारों के अग्रणी लेखक, गगनांचल पत्रिका पृ **6**
4. वही पृ **6**
5. रतिलाल शाहीन: सितंबर-अक्तूबर **2014,-** प्रेमचंद: एक बहुआयामी व्यक्तित्व गगनांचल पत्रिका पृ **10**

6. मुंशी प्रेमचंद: संस्करण **1936,** गोदान, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालंय, बम्बई पृ **36**
7. वही पृ **30**
8. सरिता : **17** अप्रेल **2017** : गोदान उपन्यास में कृषक जीवन की करूण गाथा, शब्द- ब्रह्म, भारतीय भाषाओं की अन्तर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका, पियर रीव्यूड रेफर्ड रिसर्च जर्नल पृ **39-40**
9. मुंशी प्रेमचंद: संस्करण, **1936** , गोदान, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालंय बम्बई पृ **357**
10. डॉ.रामविलास शर्मा : प्रथम संस्करण,**1952** : प्रेमचंद और उनका युग, मेहरचन्द मुन्शीराम, दिल्ली पृ **248**
11. डॉ.अब्दुरशीद.ए.शेख : प्रथम संस्करण**1999,11 -** हिंदी उपन्यास -सौ वर्ष का सफरनामा, पार्श्व पब्लिकेशन, अहमदाबाद, पृ **92**
12. सरिता : **17 अप्रेल 2017 , गोदान** : उपन्यास में कृषक जीवन की करूण गाथा, शब्द- ब्रह्म भारतीय भाषाओं की अन्तर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका, पियर रीव्यूड रेफर्ड रिसर्च जर्नल पृ **38**
13. मुंशी प्रेमचंद:संस्करण **1936** ,गोदान, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालंय बम्बई, पृ **260**

प्रो. सविता पुंडलिक चौधरी
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
किसान महाविद्यालय, पारोला जिला, जलगांव महाराष्ट्र **425111**
ईमेलः drsavitachaudhari@gmail.com **Mobile: +91 9423952593**